एथेनॉल के दाम बढ़ने से शुगर कंपनियों के शेयर में अपर सर्किट

मार्केट एनालिस्टों के मुताबिक, सरकार से सपोर्ट मिलता रहा तो चीनी मिलों के शेयरों की री-रेटिंग होगी

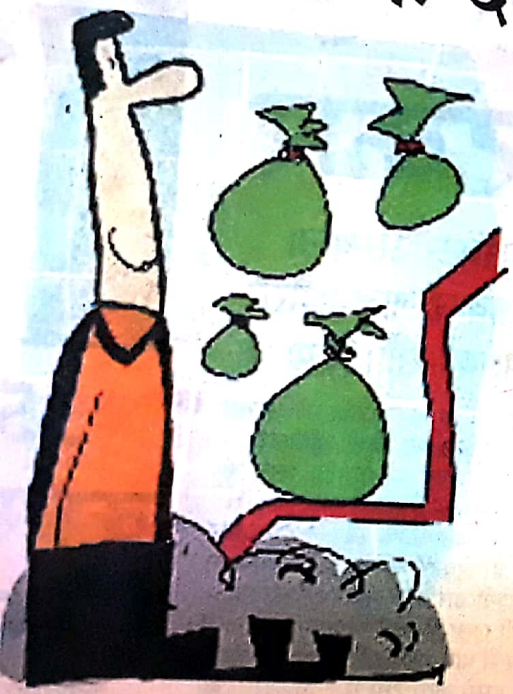

[ज्वलित व्यास | मुंबई]

सरकार के एथेनॉल के दाम बढ़ाने के बाद शुगर कंपनियों के शेयरों में अपर सर्किट लग रहा है और यह सिलसिला जारी रह सकता है। अगर सरकार आगे भी शुगर कंपनियों को सपोर्ट देती है तो इससे इन स्टॉक्स की री-रेटिंग हो सकती है। एथेनॉल का प्रॉडक्शन बढ़ाने के लिए सरकार मदद से शुगर इंडस्ट्री साइक्लिकल नहीं रह जाएगी।

एथेनॉल के दाम में बढ़ोतरी के बाद चीनी की डिमांड-सप्लाई में जो बदलाव होगा, उससे पूरी इंडस्ट्री को फायदा होगा। इनमें धामपुर शुगर, बलरामपुर चीनी मिल्स और द्वारिकेश शुगर को सबसे अधिक बेनेफिट्स मिलने की उम्मीद है। अभी धामपुर और बलरामपुर देश में सबसे ज्यादा एथेनॉल का प्रॉडक्शन करती हैं, जबकि द्वारिकेश सबसे कम लागत वाली चीनी कंपनी है। इन कंपनियों के शेयर में बुक वैल्यू से कम पर ट्रेडिंग हो रही थी। इसलिए इनमें अच्छी तेजी आ सकती है।

पिछले एक साल में पीक लेवल से शुगर स्टॉक्स में 60-80 पर्सेंट की गिरावट आई थी। चीनी की कीमत कम थी। इसलिए इन कंपनियों के मुनाफे में बड़ी गिरावट आने का अंदेशा था। वित्त वर्ष 2019 में चीनी की कीमत 37-38 रुपये के पीक लेवल से घटकर 30 रुपये किलो हो गई थी क्योंकि चीनी का उत्पादन मांग से 90 लाख टन अधिक रहने का अनुमान है। हालांकि, एथेनॉल की कीमत बढ़ाने के ऐलान से पूरी इंडस्ट्री का नक्शा बदल गया है।

ऐसे बढ़ेगा मुनाफा

- **सरकार ने** बी हेवी मोलासिज (शीरा) से निकाले जाने वाले एथेनॉल की कीमत 47.13 रुपये से बढ़ाकर 52.4 रुपये करने की बात कही है
- **वित्त वर्ष** 2019 में 3.5 करोड़ टन चीनी के उत्पादन का अनुमान लगाया गया था, लेकिन एथेनॉल के दाम बढ़ने से इसमें कमी आएगी
- **उत्पादन कम** होने से चीनी की कीमत बढ़ेगी, जिससे ऐसी मिलों के मुनाफे में बढ़ोतरी हो सकती है

सरकार ने बी हेवी मोलासिज (शीरा) से निकाले जाने वाले एथेनॉल की कीमत 47.13 रुपये से बढ़ाकर 52.4 रुपये करने की बात कही है। इसे आंशिक गन्ने के रस से निकाला जाता है। वहीं, 100 पर्सेंट शुगरकेन जूस से निकाले जाने वाले एथेनॉल का दाम 47.13 से बढ़ाकर 59.13 रुपये लीटर करने की बात कही गई है। सी हेवी मोलासिज से निकाले जाने वाले एथेनॉल के दाम में बढ़ोतरी नहीं की गई है। इसे निकालने के लिए बहुत कम गन्ने के रस का इस्तेमाल होता है। वित्त वर्ष 2019 में 3.5 करोड़ टन चीनी के उत्पादन का अनुमान लगाया गया था, लेकिन एथेनॉल के दाम बढ़ने से इसमें कमी आएगी। मार्केट एनालिस्टों का कहना है कि अगले साल चीनी का उत्पादन इस वित्त वर्ष से भी कम रहेगा। इससे एथेनॉल कैपेसिटी वाली चीनी मिलों को ही फायदा नहीं होगा बल्कि उन मिलों को भी लाभ होगा, जो एथेनॉल का उत्पादन नहीं करती हैं।

उत्पादन कम होने से चीनी की कीमत बढ़ेगी, जिससे ऐसी मिलों के मुनाफे में बढ़ोतरी हो सकती है। अभी चीनी का फ्लोर प्राइस 29 रुपये किलो है, जो बढ़ सकता है। ऐसी खबर है कि यूपी सरकार ने केंद्र से इसके एमएसपी को बढ़ाकर 34 रुपये करने को कहा है। यूपी में 75 पर्सेंट चीनी मिलों की लागत 33.5-34 रुपये प्रति किलो है। हालांकि, द्वारिकेश के लिए यह 30-31 रुपये है। बलरामपुर और धामपुर की प्रति किलो चीनी की लागत 32 रुपये है।

एथेनॉल के दाम बढ़ने से द्वारिकेश को बहुत फायदा नहीं होगा क्योंकि यह सिर्फ 30,000 लीटर एथेनॉल का रोजाना उत्पादन करती है। उसे चीनी के दाम बढ़ने से लाभ होगा।

Scanned by CamScanner